स्नातक द्वितीय खंड हिन्दी प्रतिष्ठा

'राम भक्ति साहित्य की प्रवृत्तियाँ' का शेषांश।

डॉ॰ सतीश चन्द्र पाठक,
प्राध्यापक हिन्दी विभाग
एस॰ एस॰ कॉलेज, जहानाबाद

(5) रस :- चूंकि राम काव्य का आधार गृहस्थ जीवन है जिसमें जीवन की विविधताओं का समावेश होता है। परिवार और समाज में घटित होने वाली घटनाओं का व्यक्ति पर पड़ने वाले प्रभाव की विविध स्थितियों का चित्रण प्रबंध काव्य में ही संभव है। इसीलिए राम काव्य प्रायः प्रबंधात्मक रूप में ही प्राप्त है। चूंकि राम काव्य में जीवन की विविधताओं का चित्रण हुआ है अतः प्रसंगानुकूल अनेक रसों की योजना यहां मिलती है। चूंकि राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं तथा रामभक्त भी मर्यादावादी अतः इनके द्वारा वर्णित प्रसंगों में कहीं भी स्खलन दिखलाई नहीं पड़ता। यही कारण है कि राम काव्य में कहीं भी शृंगार रस का अतिचारी वर्णन नहीं हुआ है। इसका वर्णन इतना मर्यादित एवं संयमित है कि उसमें अश्लीलता की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जब राम और सीता पुष्पवाटिका में आमने-सामने होते हैं तब कवि ने शृंगार का कैसा संयमित वर्णन किया है यह दर्शनीय है —

स्याम गौर किमि कहूँ बखानी। गिरा अनयन नयन बिनु बानी॥
[illegible] - सब उपमा कवि रहे जुठारी। केहि पटतरौं विदेह कुमारी॥

रामकाव्य में प्रायः शांतभाव की भक्ति की प्रधानता है अतः यहाँ शान्त या निर्वेद की ही प्रधानता है। वैसे विभिन्न प्रसंगों में भिन्न-भिन्न रसों की योजना यहाँ उपलब्ध है। जैसे नारद मोह में हास्य रस का नियोजन बड़ा सुन्दर बन पड़ा है। वैसे ही पुष्पवाटिका प्रसंग में शृंगार, युद्ध वर्णन में रौद्र, राम वनगमन प्रसंग तथा लक्ष्मण मूर्छा प्रसंग में करुण रस, उत्तरकांड में शान्त रस इत्यादि की योजना अत्यन्त सुन्दर एवं प्रसंगानुकूल हुई है। इतना होने के बाद भी रामकाव्य का पर्यवसान शान्त रस में हुआ है जिसमें सारे रसों का समाहार या पर्यवसान हो गया है। वस्तुतः राम काव्य में यह शान्त रस ही प्रधान है।

(6) काव्यशैली :- रामभक्त कवि प्राय: विद्वान एवं बहुज्ञ थे
इनका काव्यशैलियों पर अधिकार था। यही कारण है कि रामकाव्य
में विभिन्न काव्य शैलियों की रचनाएं उपलब्ध होती हैं।
रामचरितमानस और अध्यात्म में कथाओं की प्रबंधशैली
तो रामगीतावली एवं रामध्यानमंजरी में विद्यापति की गीत शैली,
रामायण महानाटक एवं हनुमन्नाटक में संवाद शैली तो विनय पत्रिका में
प्रेममुक्तक या आत्मनिवेदन शैली उपलब्ध है। इसमें यद्यपि प्रधा
प्रबंध शैली की ही है फिर भी प्राय: काव्यरचना की प्राय: सभी
शैलियां उपलब्ध हैं।

(7) भाषा :- रामकाव्य की भाषा प्राय: ~~[illegible]~~ अवधी है। -
राम स्वयं ~~[illegible]~~ अवध के निवासी थे अत: उनके
की मनोभावनाओं का प्राकट्य इसी भाषा में हो यह उनकी
भाषा रही होगी। इसीलिए गोस्वामी तुलसीदास ने अपने प्रसि
काव्यग्रंथ रामचरितमानस की रचना अवधी भाषा में ही की
इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि गोस्वामी जी ने अन्य भाषा का
नहीं किया। उन्होंने अपने अन्य ग्रंथों में ब्रजभाषा का ~~[illegible]~~ प्र
सफलतापूर्वक किया है। वस्तुत: अवधी और ब्रजभाषा उस
की प्रधान काव्यभाषा थी। ~~[illegible]~~ रामभक्त का समन्वयात्मक स्वभाव
से तो चाहे सामान्य उन्होंने प्रयोग तथा काल के अनुसार
बुंदेलखंडी, भोजपुरी और संस्कृत का भी प्रयोग किया है यही
स्थान-स्थान पर उन्होंने अरबी एवं फारसी का भी प्रयोग
इस प्रकार रामभक्तिसाहित्य भाषा प्रयोग की दृष्टि से अत्यंत समृ
सम्पन्न है।

(8) छन्द एवं अलंकार :- रामभक्त कवि मूलत: भक्त थे कवि
उनके प्राकट्य का माध्यम था। उनका मूल उद्देश्य कविकर्म नहीं
भी उनके काव्य साहित्य के विभिन्न उपादानों से अत्यंत समृद्ध
छन्द और अलंकार के प्रयोग में उन्हें महारत हासिल है।
भी ने प्रसंगानुकूल अनेक छन्दों का प्रयोग किया है- दोहा, चौ
सोरठा, छप्पय, श्लोक, तोमर इत्यादि उनके प्रिय छन्द हैं।

notes
Phone
email

Monday	–	5	12	19	26
Tuesday	–	6	13	20	27
Wednesday	–	7	14	21	28
Thursday	1	8	15	22	–
Friday	2	9	16	23	–
Saturday	3	10	17	24	–
Sunday	4	11	18	25	–

वैदेही अलंकारों का नियोजन भी अत्यन्त विदग्धतापूर्वक हुआ है। इनके द्वारा प्रयुक्त अलंकार चमत्कार प्रदर्शन के लिए नहीं हैं वरन् काव्य की सौन्दर्यवृद्धि के लिए हुए हैं। यही कारण है कि इनमें शब्दालंकार ~~का~~ का प्रयोग बहुतायत में नहीं किया गया है परन्तु अर्थालंकार का प्रयोग अत्यन्त सावधानी के साथ हुआ है। उपमा, रूपक, देहलीदीपक, अपह्नुति इत्यादि अलंकारों का सफल प्रयोग हुआ है।